राजस्थान में 2013 व 2018 का तुलनात्मक मतदान व्यवहारः जयपुर जिले की विराट नगर विधानसभा के विशेष संदर्भ में

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर
(राजनीति विज्ञान)

में

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रस्ताव

शोध निर्देशक

जेवीएन डॉ. लाल कृष्ण शर्मा

शोधार्थी

जेवीएन अक्षय कुमार यादव

(JVR-II/20/4065)

राजनीति विज्ञान विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर

राजस्थान, भारत

2020

शोध की प्रस्तावना (Introduction of the Proposed Research work)

आज का युग प्रजातंत्र का युग है। इसकी महत्ता, व्यापकता और लोकप्रियता का अनुमान मात्र इसी बात से लगाया जा सकता है कि यह एक राजनीतिक प्रणाली से आगे बढकर सामाजिक विद्या, आर्थिक अनिवार्यता, सांस्कृतिक आदर्श तथा नैतिक मूल्य बन कर मानव जीवन के विविध पक्षों से जुड़ गया है। आज विश्व के अधिकांश देश या तो प्रजातांत्रिक प्रणाली को अपना चुके है या उसके मूल्यों को सिद्धांत स्वीकार कर चुके है।

लोकतंत्र के अर्थ विभिन्न व्यक्तियों के लिए भिन्न हैं कुछ व्यक्तियों के लिए यह शासन का रूप है, तथा दूसरों के लिए यह सामाजिक जीवन का एक मार्ग है पूर्व विचार के लिए व्यक्ति लोकतंत्र का मूल तत्व एक देश में प्रचलित मताधिकार प्रणाली तथा निर्वाचन पद्धति और शासन तथा जनता के मध्य संबंधों में देखते है। जबकि दूसरे विचार के व्यक्तियों को इसका सार राज्य के आदर्शों तथा जनता की जीवन–पद्धति में दिखाई देता है। राम मनोहर लोहिया का जनता के शासन के रूप में लोकतंत्र पर पूर्ण विश्वास था।

भारत के लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के कई स्तर और प्रत्येक स्तर पर जन प्रतिनिधि का चुनाव किया जाता है। ग्राम पंचायत शासन की सबसे शुरूआती इकाई है। भारत में लोकतांत्रिक प्रणाली ग्राम स्तर से प्रारम्भ होकर संसदात्मक शासन व्यवस्था में परिलक्षित होती है। भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था के रूप में गांधीजी का मत है कि एक सच्चे लोकतंत्र में जनता का विभाजन बहुसंख्यक वर्ग अथवा अल्पसंख्यक वर्ग के रूप में नहीं किया जा सकता है और न इन वर्गों के आधार पर निर्णय लिये जा सकते तो उसकी चालाक शक्ति राजनीतिकरण है। सही अर्थों में भारतीय समाज को समझने की कुंजी उसकी राजनीति में निहित है। एक प्राचीन परम्पराबद्व बहुल एवं खंडित

सरंचनाओं वाला सभ्यतामूलक समाज अपनी संरचनाओं के जरिये आधुनिक बन रहा है। ऐसी ही एक मुख्य संरचना जो लोकतंत्र के प्रारम्भिक चरण से अब तक भारतीय राजनीति के विकास एवं लोकतांत्रिक परिपक्वता में सक्रिय योगदान करता आया है उस सरंचना का नाम है निर्वाचन।

लोकतंत्र जो अपने ऐतिहासिक विकास के विभिन्न चरण तय करते हुए उस स्थिति में आ पहुंचा है जहां इसके विकास की प्रक्रिया जारी है, परंतु समय के इस विकास क्रम ने लोकतंत्र की परिभाषा और अवधारणा को इसे नये आयाम एवं जिस प्रकार की परिपक्वता प्रदान की है, उससे लोकतंत्र आज मात्र शासन की पद्वति या शासन के एक प्रकार के रूप में ही संबोधित नहीं किया जाता है, वरन युग के जीवन सिद्धांत और जीवन जीने की एक पद्वति के रूप में परिभाषित हो रहा है। लोकतत्र के अंतर्गत जिन नये प्रकार, नये संदर्भ, नवीन अर्थ, नवीन आयाम व नई प्रवृत्तियों का समावेश होता दिखाई दे रहा है, उससे भारत में प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र और चुनाव प्रणाली तथा चुनाव सुधार विवेचन एक प्रासंगिक विषय बन कर उभरा है इसके मध्य नजर भी भारतीय राजनीति प्रभावित हुई है। एक सच्चे लोकतंत्र में सभी स्तरों निर्णय का आधार जनता के हित को ही स्वीकारा जा सकता है। जिसे गांधीजी ने सर्वोदय का सिद्धांत कहा है।

भारतीय राजनीति एवं मतदान व्यवहार से संबंधित विषय पर पूर्व में शोध हो चुके है लेकिन जयपुर जिले की विराट नगर तहसील में मतदान व्यवहार के बदलते आयामों के संदर्भ में नवीन शोध नहीं हुए। भले ही विभिन्न विश्वविद्यालयों में मतदान व्यवहार एवं भारतीय राजनीति को लेकर शोध कार्य पूर्ण हो चुके है लेकिन जयपुर जिले की विराट नगर तहसील को लेकर अनुभवमूलक शोध नहीं हुए है। विराट नगर तहसील के अनुभवमूलक विश्लेषण

का अभाव ही रहा है प्रस्तुत शोध इस अभाव को दूर करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास रहेगा।

पूर्ववर्ती शोधकार्य (Literature Survey)

शर्मा, योगेश चन्द्र : "भारतीय संविधान सभा", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2020

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने संविधान सभा एवं सामाजिक आर्थिक लोकतंत्र, संविधान सभा व संसदीय प्रजातंत्र, संसद में दलगत व्यवस्था और विपक्ष जैसे बिन्दुओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। पुस्तक में निर्वाचन एवं निर्वाचन का महत्व, मताधिकार, निर्वाचन आयोग और निर्वाचन आयोग की संवैधानिक स्थिति एवं उसके कार्यों एवं शक्तियों का विश्लेषण किया गया है। इस पुस्तक में लेखक ने चुनावों से संबंधित विकास क्रम में 1892 के भारत परिषद् अधिनियम से भारतीयों की सहभागिता को स्वीकारना एवं 1909 का मार्ले मिन्टो सुधार, 1919 तथा 1935 के अधिनियम और निर्वाचन, सहभागिता और प्रतिनिधित्व जैसे विषयों का विश्लेषण किया गया है।

चतुर्वेदी, अनुपम : "भारत में लोकसभा निर्वाचन मुद्दे एवं प्रवृत्तियाँ", हिमांशु पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2020.

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने संविधान निर्माण, व्यवस्था एवं व्यवस्था मताधिकार जैसे बिन्दुओं का विश्लेषण किया है। आजादी के बाद भारत में अब तक सत्रह लोकसभा चुनाव सम्पन्न हो चुके हैं प्रथम लोकसभा चुनाव से लेकर वर्तमान 17वें चुनावों तक चुनावी विश्लेषण प्रस्तुत किया है। भारत में प्रत्येक लोकसभा चुनाव की भिन्न पृष्ठभूमि, और प्रवृत्ति रही है। प्रस्तुत पुस्तक में सत्रह लोकसभा चुनावों की पृष्ठभूमि, चुनाव आयोग की तैयारी, चुनाव अभियान,

चुनावी मुद्दों, निर्वाचन परिणाम एवं निर्वाचन परिणाम के विश्लेषण के माध्यम से प्रत्येक लोकसभा निर्वाचन की प्रमुख प्रवृत्तियों को समझाया गया है।

जोशी, अपूर्व, "लोकतंत्र राजनीति और मीडिया", अनन्या प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020

प्रस्तुत पुस्तक में अपूर्व जोशी ने अपने अनुभव आधारित भारतीय राजनीति एवं मीडिया का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक में उन्होंने पेडन्यूज, सोशल मीडिया, मीडिया की विश्वसनीयता, मीडिया की निष्पक्षता, पोस्ट टुथ, फेक न्यूज जैसे विषयों का वर्णन किया है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक पिछले दशक का एक कोलाज भी प्रस्तुत करते है और उसी समय में लेखक ऐसे कठिन दौर में अभिव्यक्ति के रास्ते भी खोजता है और अपनी अनुभव आधारित राय रखते है।

यादव, योगेन्द्र, *"मेकिंग सेंस ऑफ इंडियन डेमोक्रेसी"*, पर्मानेंट ब्लेक, नई दिल्ली, 2020

मेक्रिंग सेस ऑफ इंडियन डेमोक्रेसी पुस्तक में 1950 से 2019 के भारत गणराज्य की राजनीति के लिए एक दृष्टि प्रदान की गई है। पुस्तक के पहले खंड में एक ऐतिहासिक सिंहावलोकन दिया गया है, दूसरे खंड में तुलनात्मक सिंहावलोकन में जो कि विभिन्न देशों के राजनीतिक तरीकों के बाद भारतीय राजनीतिक प्रथाओं को स्थान देता है। तीसरा खण्ड भारतीय राज्य की विशिष्ट प्रकृति को देखने के लिए सिद्धांत और विधि पर केंद्रित है। चुनावों, भविष्यवाणियों इत्यादि पर भी विस्तृत विवरण दिया गया है। इस पुस्तक में बताया गया है कि भारतीय राजनीति पर पत्रकारी और विद्वानों द्वारा लिखा जाता है। यह पुस्तक भारतीय लोकतंत्र के इतिहास को तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में रखते हुए, प्रासंगिक, सैद्धांतिक और पद्धतियों का वर्णन किया गया है।

पाण्डेय “लोकतंत्र राजनीति और मीडिया”, अनन्या प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020

प्रस्तुत पुस्तक में अपूर्व जोशी ने अपने अनुभव आधारित भारतीय राजनीति एवं मीडिया का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक में उन्होंने पेडन्यूज, सोशल मीडिया, मीडिया की विश्वसनीयता, मीडिया की निष्पक्षता, पोस्ट टुथ, फेक न्यूज जैसे विषयों का वर्णन किया है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक पिछले दशक का एक कोलाज भी प्रस्तुत करते है और उसी समय में लेखक ऐसे कठिन दौर में अभिव्यक्ति के रास्ते भी खोजता है और अपनी अनुभव आधारित राय रखते है।

कुमार, संजय : “भारतीय युवा और चुनावी राजनीति”, सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2019.

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने भारतीय सुवाओं के ऊपर एक विश्लेषण प्रस्तुत किया है और उन्होंने यह विश्लेषित किया है कि युवाओं के बारे में राय का अंतर न केवल विभिन्न आयु समूहों तक सीमित है बल्कि अन्य जनसांख्यिकीय कारक जैसे स्थान, लिंग, शैक्षिक उपलब्धि का स्तर, जाति, क्षेत्र धर्म और युवा जिस परिवार का सदस्य है, वो किस आर्थिक वर्ग से है ये सभी युवाओं के रूप में संदर्भित श्रेणी को परिभाषित करने में चुनौतियाँ पैदा करते हैं। युवाओं की सामाजिक विशेषताओं में ये अंतर भारतीय युवाओं की धारणा, झुकाव और व्यवहार को प्रभावित करते हैं न केवल सामाजिक मुद्दों के बारे में बल्कि राजनीति से संबंधित मुद्दों तथा चुनावी भागीदारी के विभिन्न पहलुओं के बारे में भी। यह पुस्तक चुनावी राजनीति में भारतीय युवाओं की राय, झुकाव, धारणा और भागीदारी में ऐसे अंतरों की पड़ता का प्रयास करती है।

सईद, एस.एम. : "भारतीय राजनीतिक व्यवस्था", भारत बुक सेंटर, लखनऊ, 2019.

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने पहले लोकसभा चुनाव से लेकर 16वें लोकसभा चुनाव तक विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में 1952, 57, 62 के चुनाव को एक दलीय आधिपत्य, 1967 के चुनाव को कांग्रेस पार्टी के ह्रास के रूप में, 1971 को चुनाव को आधिपत्य की पुनर्स्थापना 197 के चुनाव को केन्द्र में पहली साझा सरकार का निर्माण, 1980 और 1984 के चुनाव के कांग्रेस आधित्पय की पुनरावृत्ति, 1989 के चुनाव को गैर–कांग्रेसी दलों का गठबंधन, 1991 का चुनाव को कांग्रेस शासन की वापसी, 1996, 1998, 1999, 2004 तथा 2009 के चुनावों को गठबंधन सरकारों का युग और 2014 के चुनावों को एक दलीय बहुमत की साझा सरकार के रूप में विश्लेषित किया है। साथ ही प्रस्तुत पुस्तक में दल–बदल की राजनीति का विश्लेषण किया गया है।

दुबे, अभय कुमार : "लोकतंत्र के सात अध्याय", वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2018

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने सात अध्यायों के माध्यम यह बताने का प्रयास किया है कि पचास सालों में देश ने लोकतंत्र को कैसे अपनाया है। यह पुस्तक राजनीति में अरूचि दिखाने के कारण हताश होने की बजाय प्रमाणित करते हैं कि पिछड़े, दलित और आदिवासी तबके उत्तरोत्तर चुनावी प्रक्रिया और दलीय प्रणाली में अपनी भागीदारी बढ़ाते चले जा रहे हैं इस पुस्तक में यह विश्लेषण किया गया है कि समतामूलक आदर्श अनुपलब्धि से व्यथित प्रेक्षकों के विपरीत यह विमर्श दृढ़तापूर्वक लोकतंत्र का शोकगीत गाने से इंकार करता है और कर्मकांड आधारित मध्यमवर्गीय संस्कृति के बढ़ते वर्चस्व पर कोरा अफसोस करने की बजाय यह पुस्तक बाजारू राजनीति की मनोदशा में झांकते

हुए आश्वस्त करती है कि भारतीय समाज में नकारात्मक तत्वों के प्रतिकार के लिए आवश्यक सामग्री अभी मौजूद है।

गीर ग्रे जॉन, हेराश, रिचर्ड जे.वेडी एलन जेफी, *"गेटवे टु डेमोक्रेशी"*, केनगांगे लर्निंग, न्यूयार्क, 2018

प्रस्तुत पुस्तक 'लोकतंत्र के प्रवेशद्वार' राजनीति में प्रवेश हेतु कुछ आधारभूत तत्वों का विवरण प्रस्तुत करती है। राजनीतिक व्यवस्था किस तरह कार्य करती है और व्यक्तियों और समूहों ने लोकनीति का प्रभावित करने के प्रवेश द्वार खोल दिये है। प्रस्तुत पुस्तक में जनसांख्यिकी राजनीति को किस प्रकार प्रभावित करती है। इस पुस्तक में लेखकों द्वारा राजनीति में प्रवेश हेतु आधुनिक एवं नवीन प्रवेश द्वारों का वर्णन किया गया है। यह पुस्तक भारतीय राजनीति के विविध आयामों को विस्तृत रूप में प्रस्तुत करती है।

पाण्डेय, जयनारायण : *"भारत का संविधान"*, सेन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 2017

प्रस्तुत पुस्तक में भारतीय संविधान के विकास क्रम का विश्लेषण प्रस्तुत किया है साथ ही स्पष्ट एवं सरल तरीके से संविधान के उपबंधों की व्याख्या की है। इस पुस्तक में चुनावों एवं निर्वाचन आयोग से संबंधित महत्त्वपूर्ण निर्णयों तथा संविधान संशोधनों का समावेश किया गया है। शोध से संबंधित संवैधानिक बिंदुओं का विश्लेषण प्रस्तुत पुस्तक में किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक के लेखक ने लोकतांत्रिक सरकार, प्रतिनिधि, निर्वाचन, मतदाता, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव, चुनाव आयोग आदि बिन्दुओं का संवैधानिक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया है।

बिस्वाल, तपन : ***"भारतीय शासन संवैधानिक लोकतंत्र और राजनीतिक प्रक्रिया"*, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, हैदराबाद, 2017.**

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने भारत में चुनावी सर्वेक्षण के इतिहास क्रम का विश्लेषण किया है। साथ ही मतदान व्यवहार का ऐतिहासिक अवलोकन प्रस्तुत किया है। मतदान व्यवहार तथा उसके प्रभाव कारक, 1990 के पश्चात् मतदान व्यवहार तथा इसमें परिवर्तन, 2014 में मतदान व्यवहार आदि बिन्दुओं का मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने मतदान व्यवहार के सैद्धान्तिक पक्ष का विश्लेषण किया है जो कि शोध में सहायक सिद्ध होगा।

जाधव, नरेन्द्र : ***"राजनीति, धर्म और संविधान विचार*, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017**

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने डॉ. अम्बेड़कर के बहुआयामी व्यक्तित्व से संबंधित विभिन्न विषयों राजनीतिक अधिकार, गरीबी, दासता, सत्ता, लोकतंत्र, समान नागरिक संहिता, मूलभूत अधिकार और जाति व्यवस्था से संबंधित विचारों एवं उनके कार्यों का विश्लेषण किया है। डॉ. भीमराव अंबेडकर स्वतंत्र भारत के पहले कानून मंत्री तथा संविधान के सदस्य के रूप में एवं भारतीय संविधान के प्रारूप समिति के अध्यक्ष की भूमिका में भारतीय रजानीति एवं समाज से संबंधित व्याख्यानों का विश्लेषण इस पुस्तक में किया गया है।

कुरैशी, एस.वाई, ***"एन अनडाक्युमेन्टेड वंडर : द ग्रेट इंडियन इलेक्शन"*, ग्लोबल गुडरीडस, नई दिल्ली, 2017**

प्रस्तुत पुस्तक में भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त रहे एस.वाई. कुरैशी ने अपने कार्यकाल एवं प्रशासनिक अनुभव का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है।

साथ ही चुनाव सुधारों के संदर्भ में व्यापक सुझाव प्रस्तुत किए है। यह पुस्तक चुनाव सुधारों औपचारिक एवं अनौपचारिक तथ्यों के मूल्यांकन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। साथ ही इस पुस्तक में उन तथ्यों का भी विश्लेषण किया जो भावी चुनावों में सुधारों हेतु एक मील का पत्थर साबित हो सकते है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने स्वयं के मुख्य चुनाव आयुक्त रहते हुए अनुभव किए गए वृतांतों का विश्लेषण किया है।

पाल्सीकर, सुहास, *''इंडियन डेमोक्रेसी''*, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2017

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने भारत में लोकतांत्रिक प्रणाली के प्रक्रियागत विषय पर विश्लेषण प्रस्तुत किया है और बताया है कि लोकतंत्र को व्यवहार से कहीं अधिक सहायता से प्रदर्शित किया जाता है लोग उसे आदर्श मानते है लेकिन व्यहारिक रूप में यह बहुत ही कठिन है। लोकतंत्र के व्यापक समर्थन ने पिछले सात दशकों में भारत में लोकतंत्र के जीवन को दिखाया है। लोकतंत्र से संबंधित वार्तालाप की शुरूआत राष्ट्रीय आंदोलन से होती है। प्रस्तुत पुस्तक में लोकतंत्र की शुरूआत में किस दशा में होती है और वर्तमान दिशा क्या है आदि का विश्लेषण किया गया है।

दिवाकर, रेखा, *''पार्टी सिस्टम इन इंडिया''*, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2017

प्रस्तुत पुस्तक में भारत में दलीय राजनीति और गठबंधन की राजनीति के बारे में विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत पुस्तक में कांग्रेस सिस्टम हिन्दू राष्ट्रवाद, बीजेपी का उद्भव और भारतीय राजनीति में उभरते हुए नवीन दलीय व्यवस्था का व्यापक विवरण प्रस्तुत किया है। पार्टी प्रणालियों के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक के पक्षों के बारे में वर्णन किया गया है।

इस पुस्तक में भारत में दलीय प्रणाली के लक्षणों, विकास और निर्धारकों के विश्लेषण के साथ–साथ सैद्धान्तिक व्याख्याओं की जांच और प्रायोगिक आंकड़ों के विश्लेषण के माध्यम से भारतीय दलीय प्रणाली का ऐतिहासिक रूप से विश्लेषण किया गया है। इस पुस्तक लेखिका इस तर्क पर बल देती है कि प्रतिस्पर्धी पार्टी प्रणाली भारतीय लोकतंत्र के कार्यकारण की कुंजी है और ये पार्टियाँ राज्य और इसके नागरिकों के बीच सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी बनी हुई है।

कुमार, संजय एवं राय, प्रवीण, *"मेजरिंग वोटिंग बिहेवियर इन इंडिया"*, सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2017.

प्रस्तुत पुस्तक में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों में जाति एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में बताया है। संजय कुमार एवं प्रवीण राय ने अपनी इस पुस्तक में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले सामाजिक कारकों में आयु, लिंग, शिक्षा, निवास, वर्ग, जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र आदि को सम्मिलित किया है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने मतदान व्यवहार और रूख को मापना, भारत में चुनाव अध्ययनों का ऐतिहासिक सिंहावलोकन, मतदान विकल्पों को मापने के विभिन्न तरीके, चुनाव सर्वेक्षण में, वैज्ञानिक नमूना–चयन का महत्व प्रश्नावली, जानकारी एकत्र करने का एक महत्त्वपूर्ण साधन, फील्डवर्क और आंकड़ों का संग्रह, आंकड़ों का विश्लेषण और सर्वेक्षण आदि अध्यायों के माध्यम से उपर्युक्त विषयों का विश्लेषण किया है।

नॉरिस, पीपा, *"इलेक्टोरल इंजीनियरिंग"*, कैम्ब्रिज पब्लिकेशन, लंदन, 2016.

प्रस्तुत पुस्तक में नॉरिस पीपा ने राजनीति विज्ञान के सोशल इंजीनियरिंग सिद्धान्त को आधार बनाकर इलेक्टोरल इंजीनियरिंग सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इसमें बताया कि किस प्रकार चुनावों में मतदान व्यवहार को व्यापक रूप में प्रभावित किया जाता है। मतदान व्यवहार को प्रभावित करने

वाले उन कारकों का विश्लेषण किया है, जो वर्तमान काल में प्रदर्शित हुए है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने संरचना बनाम संस्कृति, निर्वाचन प्रणालियों को वर्गीकृत करना, चुनाव प्रणाली का मूल्यांकन, मतदान व्यवहार, दल व्यवस्था, दल प्रतिप्रतिबद्धता, राजनीतिक प्रतिनिधित्व के लिए पवित्रता, महिलाओं का प्रतिनिधित्व, जातीय अल्पसंख्यक और निर्वाचन अभियांत्रिकी का प्रभाव आदि अध्यायों के माध्यम से उपर्युक्त विषयों का विश्लेषण किया गया है।

मेहरा, के. अजय, *"इमरजिंग ट्रेंडस् इन इंडियन पॉलिटिक्स"*, रूटलेडज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2016.

अजय मेहरा की इस पुस्तक में भारतीय राजनीति एवं मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले विभिन्न विशिष्ट तत्वों का उल्लेख किया है। साथ ही भारतीय राजनीति की गठबंधन सरकारों की विफलताओं के कारण पूर्ण बहुमत से बनने वाली सरकारों का भी उल्लेख किया है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने गठबंधन की राजनीति, कार्यकारी प्रभुत्ववाली संसदीय प्रणाली, एक सदस्यीय चुनाव क्षेत्र, नव संस्थावाद, आर्थिक मुद्दे (चुनावों के संदर्भ में) वर्तमान के चुनावों में मीडिया की भूमिका विदेश नीति और भारतीय राजनीति जैसे विषयों का विश्लेषण किया है।

राणा एम॰एस॰ "इण्डिया वोट्स लोकसभा एण्ड विधानसभा इलेक्शन्स 1999–2000 (All analysis, election data and party manifesto), बी॰आर॰ पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली ने अपने अध्ययन में चुनाव की व्युत्पत्ति से लेकर गठजोड एवं राष्ट्रीय पार्टियों की चुनावों में उपलब्धियाँ आदि का विशेषकर राजस्थान के सन्दर्भ में विस्तृत विवेचन किया है तथा पार्टियों के घोषणा–पत्र और चुनाव प्रचार एवं चुनाव परिणामों का तथ्य परक विश्लेषण प्रस्तुत किया है परन्तु इसमें मतदान व्यवहार पर प्रकाश नहीं डाला गया है।

पलशिकर सुहास, कुमार संजय एवं लोधा संजय, “Electrol Politics in India : The Resurgence of the Bharatiya Janta Party टेलर एण्ड फ्रैन्सिस पब्लिकेशन, दिल्ली, 2017 में 2014 के 16वीं लोकसभा के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में चली लहर एवं काँग्रेस पार्टी की अप्रत्याशित पराजय के संदर्भ में मतदान व्यवहार का विस्तृत विश्लेषण किया है।

शोध कार्य के प्रमुख उद्देश्य (Objectives of the proposed Research Work)

इस शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर वर्तमान समय तक भारतीय राजनीति एवं मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारकों में व्यापक परिवर्तन आया है। वर्तमान युग तकनीकी का युग है जिसके भारतीय राजनीति एवं मतदान व्यवहार को तकनीकी एवं तकनीक से संबंधित सोशल मीडिया ने व्यापक रूप से प्रभावित किया है। जिसके कारण मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले नवीन कारक उभरकर सामने आ रहे है उन सभी कारकों एवं प्रभावित करने वाले नवीन कारकों का मूल्यांकन करना है।

उद्देश्य (Objectives)

- निर्वाचन आयोग के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए राजनीतिक परिस्थितियाँ स्थायी नहीं होती है। निरन्तर परिवर्तनशील होती रहती हैं। इसलिए निर्वाचन आयोग के बारे में पहले से जो जानकारी हमारे पास है वह आगे चलकर सही सिद्ध नहीं होती है। ऐसी स्थिति में इस बात की आवश्यकता है कि हमारे द्वारा नवीन तथ्यों के बारे में पता लगाया जाये ताकि हमारा ज्ञान सही सिद्ध हो सके।
- निर्वाचनों के आयोजन की विधि–सम्मत प्रशासनिक व्यवस्था व प्रक्रिया की पर्याप्तता व प्रभाविकता का आंकलन।

- निर्वाचन प्रशासन के विभिन्न स्तरों के केन्द्रीय, राज्यीय एवं जिला स्तरीय संरचना की निष्पक्षता का मूल्यांकन।
- निर्वाचन व्यवस्था के विकारों के सम्बन्ध में चुनाव सुधारों का अभिज्ञान, इस क्षेत्र में हुए प्रयत्नों का परीक्षण एवं निर्वाचन आयुक्तों के आचरण की समीक्षा।
- लोकतन्त्र गणराज्य की स्थापना की मुख्य इकाई 'मतदाता' के मतदान व्यवहार का समग्र मूल्यांकन।
- मतदान व्यवहार द्वारा लोकतंत्र की भावना को दूषित करने वाले तत्वों यथा–जातिवाद, धनबल, बाहुबल, राजनैतिक भ्रष्टाचार, धर्म जैसे कारकों का अध्ययन।
- मतदान व्यवहार के सम्बन्ध में मतदाताओं के आचरण को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक कारकों का अवलोकन।
- लोकतंत्र में जहर घोलने वाले तत्वों का मूल्यांकन।
- राजनैतिक दल, उनकी नीतियों एवं चुनाव घोषणा पत्रों का मूल्य परक विश्लेषण प्रस्तुत किये जाने का प्रयास किया जायेगा।
- मतदान के महत्त्व पर प्रकाश डालकर उसके उत्प्रेरक तत्वों का समावेश करने का एक प्रयास प्रस्तुत किया जायेगा।

शोध विधि तंत्र (Research Methodology)

प्रस्तावित अध्ययन अपने शीर्षक, उद्देश्यों एवं अध्ययन समस्या की दृष्टि से न केवल व्यापक बल्कि बहुमुखी प्रकृति का होने के कारण अध्ययन पद्वति विभिन्न पक्षों के संयोजन की मांग करती है।

चूंकि, यह अध्ययन भारत में 1952 के प्रथम आम चुनाव से लेकर 2019 के 15वीं विधानसभा चुनावों तक लोकतंत्र के बदलते हुए प्रतिमानों, निर्वाचन

तंत्र एवं प्रक्रिया के अध्ययन विश्लेषण को अध्ययन की प्राथमिक इकाई के रूप में महत्व देता है, अतः सर्वप्रथम विभिन्न पुस्तकों के अध्ययन का संदर्भ शोध के लिए द्वितीयक आंकड़ों को आवश्यकता एवं महत्व को रेखांकित करता है।

अध्ययन का उद्देश्य एवं क्षेत्र घटनाओं का केवल क्रमबद्व विवरण प्रस्तृत करना ही नहीं है, वरन अनुभवमूलक अध्ययन के माध्यम से कुछ सुधारात्मक निष्कर्ष अपेक्षित है, जिसके लिए सम्पूर्ण निर्वाचन तंत्र एवं उसकी प्रक्रिया के व्यापक परिदृश्य में आने वाले विविध वर्गों यथा मतदाता, राजनीतिक दल, उम्मीदवार, सांसद एवं विधायक तथा प्रशासनिक मशीनरी के अनौपचारिक साक्षात्कार एवं प्रश्नावली का संदर्भ अपेक्षित है। जिसके लिए प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित अध्ययन पद्वति प्रासंगिक होगी।

शोध का निश्चित निष्कर्षों एवं सिद्वांत निर्माण तक पहुंचाने के लिए एक सुनिश्चित क्षेत्र का अध्ययन अपेक्षित है जिसके लिए शोध अध्ययन में उपरोक्त वर्गों के 250 व्यक्ति विशेष का अध्ययन किया जाएगा।

शोध प्रश्न (Question of research work)

- क्या मतदाता मतदान करते समय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कारकों के बजाय जातिगत कारकों से प्रभावित होकर मतदान करता है?
- क्या मतदाता अपने निर्वाचन प्रतिनिधि के करिश्माई व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मतदान करता है?
- क्या मतदाता स्थानीय मुद्दों के बजाय क्षेत्रीय मुद्दों को ध्यान में रखकर मतदान करता है?
- क्या मतदाता आधुनिक निर्वाचन के तरीकों से प्रभावित होकर अपने मत का प्रयोग करता है?

- क्या मतदाता नापसंदगी के अधिकार का प्रयोग करते समय किन–किन मतदान व्यवहार को ध्यान में रखता है?
- क्या मतदाता वर्तमान राजनीतिक दलों की कार्यप्रणाली एवं मैनीफेस्टो से प्रभावित होकर अपने मतदान व्यवहार में बदलाव लाता है?

प्रस्तावित शोध कार्य का महत्त्व (Importance of proposed research work)

किसी भी प्रदेश में वहाँ के मतदान व्यवहार को समझने के लिए वहाँ के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक व भौगोलिक परिवेश की जानकारी होना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि नेतृत्व का निर्माण करने वाले तत्व व उसके कारकों पर इन समस्त पहलुओं का अत्यधिक भाव रहता है नेतृत्व की प्रकृति को निर्धारित करने में मतदाताओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है क्योंकि नेतृत्व की भूमिका नेताओं और मतदाताओं के बीच की होती हैं।

यहाँ पर नेता से तात्पर्य जनप्रतिनिधि से एवं निर्माण तत्व मतदाता तथा उसे प्रभावित करने वाले कारक का अर्थ मतदान व्यवहार से है।

भारत एक विशाल लोकतांत्रिक गणराज्य है इसमें समयबद्ध चुनाव सम्पन्न कराए जाकर एक लोकतांत्रिक सरकार का गठन किया जाता है। चुनावों जैसी जटिल प्रक्रिया को सम्पन्न कराने हेतु भारतीय चुनाव आयोग व राज्य स्तरीय निर्वाचन आयोग के सामने काफी कठिनाईयाँ उत्पन्न होती हैं। भारतीय निर्वाचन आयोग के समक्ष चुनौतियों के समाधान व निर्वाचन आयोग की निष्पक्षता को जांचने हेतु शोध कार्य आवश्यक है।

- भारतीय चुनाव आयोग व राज्य स्तरीय निर्वाचन आयोग के सामने काफी कठिनाईयाँ उत्पन्न होती हैं इनके निवारण के लिए अध्ययन की आवश्यकता जरूरी हो जाती है।

- चुनावों की जटिल प्रक्रिया को भारत की जनता, मतदाता, अभ्यर्थियों आदि को विशुद्ध रूप से जानना आवश्यक प्रतीत होता है।
- चुनाव आयोग के संरचनात्मक स्वरूप को समझने के लिए अध्ययन आवश्यक है।
- चुनाव आयोग की निष्पक्षता को जानने के लिए अध्ययन करना जरूरी हो जाता है।
- निर्वाचन व्यवस्था में हुए बहुआयामी बदलावों को जानने व समझने के लिए अध्ययन करना जरूरी है।
- राजस्थान में मतदान व्यवहार के लिए आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक व भौगोलिक परिवेश का अध्ययन करना जरूरी हो जाता है।

अनुसंधान के अध्ययन में मतदान व्यवहार का अध्ययन करना जरूरी है मतदान व्यवहार में मतदाता मतदान में किन तत्वों से प्रभावित होता है। मतदान व्यवहार में प्रथमतः यह अध्ययन किया जाता है कि मतदाता को मतदान करने के लिए कौनसे तत्व प्रेरित करते हैं और कौन से तत्व निरूत्साहित करते हैं दूसरे मतदान व्यवहार में यह अध्ययन किया जाता है कि कि तत्वों से प्रभावित होकर एक मतदाता किसी विशेष राजनीतिक दल और किसी विशेष उम्मीदवार को मत देता है। मतदान का अध्ययन सर्वप्रथम 1913 में किया गया था। इसके बाद अमेरिका, ब्रिटेन आदि में इसका अध्ययन व्यापक रूप में किया जाने लगा। भारत में भी मतदान व्यवहार का अध्ययन द्वितीय आम चुनावों के बाद किया जाने लगा।

व्यवहारवादी उपागम, विश्लेषण के इकाई के रूप में संस्थाओं की अपेक्षा व्यक्ति तथा समूह के आचरण पर बल देता है। व्यवहारवाद के अध्ययन की इकाई मानव का ऐसा व्यवहार जिसका प्रत्येक व्यक्ति द्वारा पर्यवेक्षण, मापन व सत्यापन किया जा सकता है। डेविड ट्रूमेन के अनुसार, "व्यवहारवादी उपागम

से अभिप्राय है कि अनुसंधान क्रमबद्ध हो और अनुभवात्मक तरीकों से प्रयोग किया जाय।" भारत में चुनाव में मतदान व्यवहार का अध्ययन करते समय अधिकांश विद्वानों ने व्यवहारवादी उपागम का प्रयोग किया है।

मतदान व्यवहार के अध्ययन में शोधार्थी के सामने अनेक प्रकार की कठिनाईयाँ आती है जिस वजह से इसका अध्ययन करना जरूरी हो गया–

क्षेत्रीय भिन्नता–एक क्षेत्र में मतदान व्यवहार के आधार पर दूसरे क्षेत्र के मतदान व्यवहार के सम्बन्ध में निष्कर्ष नहीं निकाले जा सकते, क्योंकि राजस्थान जैसे प्रदेश में एक क्षेत्र का मतदान व्यवहार दूसरे क्षेत्र के मतदान व्यवहार से भिन्न होता है।

अध्ययन का आधार क्या हो–मतदान व्यवहार का अध्ययन किन आधारों और किन शीर्षकों के अन्तर्गत किया जाय, इस सम्बन्ध में भी अध्ययन की आवश्यकता जरूरी है।

अध्यायवार योजना (Tentative chapter wise Plan/scheme/Details)

अध्याय प्रथम : परिचयात्मक

प्रस्तुत शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में निम्नलिखित शीर्षकों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया जायेगा–

1. परिचय
2. उपलब्ध साहित्य की समीक्षा
3. अध्ययन की आवश्यकता एवं उद्देश्य
4. अध्ययन का महत्व
5. अध्ययन हेतु शोध प्रविधि

6. अध्ययन योजना

अध्याय द्वितीय : भारतीय निर्वाचन व्यवस्था : संवैधानिक तंत्र एवं भूमिका

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत भारत के लोकतंत्र हेतु स्थापित संस्था भारत के शीर्षस्थ स्वरूप से लेकर निर्वाचन क्षेत्र के स्तर पर निर्वाचन तंत्र के सांगठनिक एवं प्रक्रियात्मक स्वरूप को परिलक्षित करने का प्रयास किया जायेगा। इस अध्याय का परिसीमन, निर्वाचन नामावली को तैयार करने, मतदान हेतु आवश्यक प्रबंध करना तथा मतदान व्यवहार जैसे महत्वपूर्ण विषयों को सम्मिलित किया जायेगा। साथ ही निर्वाचन प्रक्रिया अभ्यर्थियों की योग्यता–अयोग्यता, मतदान मतगणना, भ्रष्ट आचरण, निवचिन अपराध जैसे प्रक्रियात्मक विषयों पर भी प्रकाश डाला जायेगा।

अध्याय तृतीयः मतदान व्यवहार : अवधारणात्मक पक्ष

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मतदान व्यवहार मतदान व्यवहार के अवधारणात्मक पक्ष पर प्रकाश डाला जायेगा साथ ही मतदान व्यहार को प्रभावित करने वाले कारकों का विवरण विस्तृत रूप से प्रस्तुत करके इसके, व्यवहारिक पक्ष का भी विवरण प्रस्तुत किया जायेगा।

अध्याय चतुर्थ : भारत में मतदान व्यवहार एवं विश्लेषण

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत भारत में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले विभिन्न प्रकार के कारकों को परिलक्षित करने के साथ इसे ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी मतदान व्यवहार के कारकों को परिलक्षित किया जायेगा।

अध्याय पंचम : राजस्थान में मतदान व्यवहार : विराट नगर तहसील के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्याय में जयपुर जिले की विराट नगर तहसील के विवरण साथ ही अनुभवमूलक अध्ययन के विवरण को परिलक्षित किया किया जायेगा।

अध्याय षष्ठम् : निष्कर्ष : चुनौतियाँ एवं सुझाव

शोध के अन्तिम अध्याय में निष्कर्षात्मक विवेचन एवं समस्त शोध का विचार मंथन कर शोध के पूर्व उललेखित अध्यायों के आधार पर प्राप्त तथ्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक सामग्री के सार को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जायेगा।

अंत में प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त संदर्भ गंथों की सूची भी संलग्न की जायेगी।

शोधकार्य का अनुमानित समय (Tentative Duration for Completion of the Proposed Research Work)

प्रथम वर्ष में शोधार्थी द्वारा आंकड़ों का संग्रहण, सारणीयन, पुस्तकालय विजिट किया जायेगा। द्वितीय वर्ष में आंकड़ों का विश्लेषण, प्रतिवेदन लेखन किया जायेगा। तृतीय वर्ष में अध्ययन का विश्लेषण, प्रतिदर्श सर्वेक्षण तथा परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात् लेखन कार्य सम्पूर्ण कार्य कर टंकण हेतु दिया जायेगा। साथ ही शोध प्रबंध का प्रस्तुतीकरण कर इसे इतिश्री प्रदान की जायेगी।

प्रस्तावित शोध कार्य से अपेक्षित योगदान (Expected contribution from the proposed study)

निर्वाचन प्रक्रियागत रूप में लोकतंत्र का वो भाग है जिसके माध्यम से मतदाता अपनी वास्तविक अभिव्यक्ति करता है। निर्वाचन व्यक्ति की भावनात्मक

स्थिति को भी प्रस्तुत करते है। प्रथम युद्व के पश्चात एवं वर्तमान तक लोकतंत्र विभिन्न स्वरूपों में देखा गया है साथ ही उत्तरोत्तर रूप में इसका विकास है। लोकतंत्र विभिन्न आयाम निकलकर सामने आये है। सरकारों के विभिन्न स्वरूप भी लोकतंत्र की प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष स्थिति को प्रस्तुत करते हैं। द्वितीय विश्वयुद्व के पश्चात अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकतांत्रिक प्रणालियों, संस्थाओं का विकास हुआ। यह विकास संयुक्त राष्ट्र संघ के रूप में देखा जा सकता है। प्रक्रियागत रूप में लोकतांत्रिक व्यवस्था को लागू कर देने से ही लोकतंत्र वास्तविक रूप में लागू नहीं हो जाता है। बल्कि उसमें निरंतर सुधार करने की आवश्यकता है इसी संदर्भ में भारत विभिन्न प्रकार के निर्वाचन सुधार हुए साथ ही चुनावों से संबंधित विधि आयोग के कई प्रतिवेदन आये। उक्त अध्ययन अंतः अनुशासनात्मक महत्व की अपेक्षा रखता है। लोकतंत्र एक राजनीतिक विचार होने के साथ–साथ समाज विज्ञानों के विविध अनुशासनों यथा समाजशास्त्र, लोक प्रशासन में भी महत्वपूर्ण बना हुआ है। निर्वाचन सुधारों के अंतर्गत मनोवैज्ञानिक कारकों के विवेचन की आवश्यकता इसे मनोविज्ञान के अध्ययन क्षेत्र में भी सम्मिलित करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाठक, कृष्णकांत (2016); *"समाज एवं राजनीतिक दर्शन"*, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ.सं. 190.
2. मेहता, वी.आर. (2017); *"भारतीय राजनीतिक चिंतन के आधार"*, नई दिल्लीः मनोहर पब्लिकेशन, पृ.सं. 200.
3. कुरेशी, एस.वाय. (2017); *"लोकतंत्र के उत्सव की अनकही कहानी"*, नई दिल्लीः राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, पृ.स. 207.
4. मेहता, प्रताप भानू (2003); *"द बर्डन ऑफ डेमोक्रेसी"*, गुरुग्रामः पेंगुइन बुक्स, पृ.स. 30.
5. भार्गव, प्रभा (2006); *"चुनाव घोषणा पत्र : सिद्धांत एवं स्थिति"*, जयपुरः राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृ.सं. 1.
6. वर्मा, श्रीराम (2018); *"भारतीय राजनीतिक विचारक"*, जयपुर कॉलेज बुक सेंटर, पृ.सं. 425.
7. कुमार, संजय (2018); *"राय प्रवीण"*, नई दिल्लीः सेज पब्लिकेशन, पृ.सं. 1.
8. चंद्र, विपिन (2015); *"स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद का भारत"*, दिल्लीः हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, पृ.सं. 251.
9. बसु, दुर्गादास (2010); "भारत का संविधान एक परिचय", लेक्सिस नेक्सिस पब्लिकेशन, गुरूग्राम, 2010, पृ.सं. 395.
10. मंगलानी, रूपा (2017); *"भारतीय शासन एवं राजनीति"*, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ.सं. 220.
11. *"भारत का संविधान"* (2016), इलाहाबादः सेंट्रल लॉ पब्लिकेशन, पृ.सं. 79.

12. दिवाकर, रेखा (2017); *"पार्टी सिस्टम इन इंडिया"*, नई दिल्लीः आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, पृ.सं. 1

13. चौधरी, लाखाराम (2019); *"भारत में चुनावी राजनीति एवं चुनाव सुधार के प्रयास"*, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ.सं. 3.

14. सईद, एस.एम. (2019); *"भारतीय राजनीतिक व्यवस्था"*, लखनऊः भारत बुक सेण्टर, पृ.सं. 233.